NAME - MONA GUPTA

NAME OF THE COLLEGE - DURGA COLLEGE RAIPUR (C.G.)

NAME OF FACULTY - COMMERCE

DESIGNATION - ASST. PROFESSOR

TOPIC - MARKET STRUCTURE AND CLASSIFICATION

Page No.
Date / /

बाजार संरचना एवं वर्गीकरण

बाजार →

" अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का अर्थ किसी ऐसे स्थान विशेष से नहीं लगाया जाता है जहाँ वस्तुओं का क्रय विक्रय किया जाता है वरन् उस समस्त क्षेत्र से होता है जिसमें वस्तु के समस्त क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच इस प्रकार का स्वतंत्र सम्पर्क होता है कि वस्तु की कीमत की प्रवृति शीघ्रता व सुगमता से समान होने की पायी जाती है। " - कुर्नो के अनुसार

विशेषताएं →

(i) एक क्षेत्र
(ii) एक वस्तु
(iii) क्रेता एवं विक्रेता
(iv) स्वतंत्र प्रतियोगिता
(v) एक मूल्य

बाजार के विस्तार को प्रभावित करने वाले तत्व

(I) **वस्तु की विशेषताएं**

वस्तु की सर्वव्यापक मांग
वहनीयता

Page No.
Date / /

विज्ञापन
पूर्ति की पर्याप्तता
शीघ्रनाशिता
स्थानापन्न वस्तुओं की संख्या

II देश की आंतरिक दशाएं
श्रम विभाजन
यातायात व संचार
व्यापार का वैज्ञानिक तरीका
बैंकिंग सुविधा
सरकार की नीतियाँ
शान्ति व सुरक्षा

बाजार के रूप या संरचनाएं
Forms of Market or Market Structure

I पूर्ण प्रतियोगिता →
पूर्ण प्रतियोगिता तब पायी जाती है जब प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिए माँग पूर्णतया लोचदार होती है, अर्थात् विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिससे कि किसी एक विक्रेता का उत्पादन कुल उत्पादन का एक थोड़ा भाग होता है तथा सभी क्रेता प्रतियोगि विक्रेताओं के बीच चुनाव करने की दृष्टि

बाजार का वर्गीकरण

I क्षेत्र के आधार पर
(i) स्थानीय बाजार
(ii) प्रादेशिक बाजार
(iii) राष्ट्रीय बाजार
(iv) अंतर्राष्ट्रीय बाजार

II समय के आधार पर
(i) अति अल्पकालीन बाजार
(ii) अल्पकालीन बाजार
(iii) दीर्घकालीन बाजार
(iv) अति दीर्घकालीन बाजार

III प्रतियोगिता के आधार पर
(i) पूर्ण प्रतियोगिता बाजार
(ii) अपूर्ण प्रतियोगिता बाजार
(iii) एकाधिकार बाजार

IV वैधानिकता के आधार पर
(i) उचित बाजार
(ii) अवैध बाजार

V वस्तुओं की प्रकृति के आधार पर
(i) उपज बाजार
(ii) स्कन्ध बाजार
(iii) वस्तु बाजार

VI कार्य के आधार पर
(i) विशिष्ट बाजार
(ii) मिश्रित बाजार
(iii) नमूने द्वारा बाजार
(iv) श्रेणियों पर आधारित बाजार

Date / / Page No.

से समान होते है, जिससे कि बाजार पूर्ण हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगिता की दशाएं

(i) वस्तुओं का समरूप होना।
(ii) क्रेताओं व विक्रेताओं की अधिक संख्या
(iii) उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता होना
(iv) क्रेता व विक्रेता में बाजार का पूर्ण ज्ञान
(v) उद्योग में बड़ी संख्या में फर्मों का होना
(vi) फर्मों का प्रवेश व निर्गमन स्वतंत्र होना।

पूर्ण प्रतियोगिता एक काफी काल्पनिक दशा है वास्तव में पूर्ण प्रतियोगिता के सभी लक्षण या दशाएं किसी बाजार में विद्यमान नहीं होते है

II विशुद्ध एकाधिकार

विशुद्ध एकाधिकार तब होता है जब किसी वस्तु का एक और केवल एक ही फर्म द्वारा उत्पादन एवं विक्रय किया जाता है। अर्थात विशुद्ध एकाधिकार एक फर्म वाला उद्योग है, जहां एकाधिकार फर्म की वस्तु तथा अर्थव्यवस्था में किसी अन्य वस्तु के बीच आड़ी मांग की लोच शून्य होती है।

विशुद्ध एकाधिकार की विशेषताएँ ->

(i) एकाधिकारी का अपनी वस्तु पर पूर्ण नियंत्रण होना।

(ii) एकाधिकारी का माँग वक्र ऋणात्मक ढाल का होता है।

(iii) फर्म व उद्योग दोनों का माँग तथा पूर्ति वक्र एक ही होता है

(iv) एकाधिकारी को परोक्ष प्रतियोगिता का भय होता है।

(v) प्रतियोगिता का अभाव होने एवं स्थानापन्न वस्तुओं का अभाव होने से एकाधिकारी का विज्ञापन व्यय नहीं होता है।

III अपूर्ण प्रतियोगिता

अपूर्ण प्रतियोगिता तब होती है जब उसमें पूर्ण प्रतियोगिताओं की विशेषताओं की कमी होती है

प्रो. ए. पी. लर्नर -> अपूर्ण प्रतियोगिता तब होती है जब विक्रेता की वस्तु

का माँग वक्र गिरती हुई दशा में होता है।

अपूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं

- क्रेता एवं विक्रेताओं की असमानता
- वस्तुओं की प्रकार में अंतर
- क्रेताओं की गतिशीलता का अभाव
- अन्य यातायात व्यय

अपूर्ण प्रतियोगिता के प्रकार

(i) द्वयाधिकार
(ii) अल्पाधिकार
(iii) एकाधिकारी

(i) द्वयाधिकार → यदि किसी समय किसी बाजार में एक वस्तु के दो उत्पादक हो और ये दोनों उत्पादक बाजार में अपनी वस्तु को बेचने के लिए प्रतियोगिता करते है तो उसे द्वयाधिकार कहते है।

(ii) अल्पाधिकार →
किसी बाजार में अल्पाधिकार की स्थिति तब होती है जब उस बाजार

Page No.
Date / /

में थोड़े से विक्रेता हो और उनमे आपसी प्रतियोगिता भी कम हो जैसे लोह इस्पात उद्योग आदि।

अल्पाधिकार के रूप निम्न है

विशुद्ध अल्पाधिकार -> जब सभी फर्मे आपस में मिलकर समान वस्तु का उत्पादन तथा विक्रय करती है।

विभेद अल्पाधिकार -> जब अलग अलग फर्मे अलग अलग वस्तुओ का उत्पादन करती है।

सामूहिक अल्पाधिकार -> जब फर्मे वस्तु के उत्पादन, कीमत, बाजार क्षेत्र आदि के विषय में समझौता कर लेती है।

पूर्ण अल्पाधिकार -> जब अलग अलग फर्मो के द्वारा वस्तु के उत्पादन तथा विक्रय के लिए पृथक नीतियां अपनायी जाती है।

DOMS Page No. Date / /

अल्पाधिकार की विशेषताएँ

(i) कुछ विक्रेता
(ii) विक्रेताओं की पारस्परिक निर्भरता
(iii) कीमत नियंत्रण
(iv) फर्मों का प्रवेश व बहिर्गमन कठिन
(v) विज्ञापन व्यय अधिक
(vi) लगभग प्रमाणित अथवा भेदित वस्तुएँ

III एकाधिकारी प्रतियोगिता

एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार का वह रूप है जिसमें बहुत सी फर्में कार्य करती है और प्रत्येक फर्म मिलती जुलती वस्तुए बेचा करती है परंतु उन वस्तुओं में समरूपता नहीं होती। उनमे थोड़ा बहुत भेद अवश्य पाया जाता है। एक विक्रेता अपनी वस्तु की अधिक मात्रा मूल्य में कमी करके बेच सकता है। एकाधिकारी प्रतियोगिता में विक्रेता का माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है।

Page No.
Date / /

एकाधिकारी प्रतियोगिता की विशेषताएं

वस्तुओं का विभेदीकरण
विक्रेताओं की अधिक संख्या
गैर मूल्य प्रतिस्पर्द्धा
फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश